नब्बे वर्षीय दलाई लामा का जन्मदिन पर होगा कृतज्ञतापूर्ण सम्मान

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

वर्ल्ड पार्लियामेंटेरियंस कन्वेंसन ऑन तिब्बत के 9वें अधिवेशन में सर्वसम्मत निर्णय हुआ है कि परमपावन दलाई लामा के आगामी जन्मदिन पर उन्हें विशेष रूप से सम्मानित कर उनके योगदान के लिये कृतज्ञता प्रकट की जाये। पूर्व में तिब्बत के राजप्रमुख रह चुके दलाई लामा बौद्ध परंपरा के महान् धर्मगुरु हैं। उनका जन्म 6 जुलाई, 1935 को हुआ था। इस दृष्टि से आगामी 6 जुलाई, 2025 को अपने जीवन की 90वीं वर्षगाँठ पूर्ण कर वे 91वें वर्ष में प्रवेश कर जायेंगे। जापान के संसदीय हॉल में 2 से 4 जून, 2025 तक सम्पन्न इस अधिवेशन मे 29 देशों के सांसद, स्पीकर, शिक्षाविद्, विशेषज्ञ, राजनयिक तथा पत्रकार इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि दलाई लामा तिब्बती संघर्ष के साथ विश्वशांति, सद्भाव, पर्यावरण आदि क्षेत्र में सक्रिय योगदान कर रहे हैं। उनकी शिक्षा संबंधी सी–लर्निंग (सोसल, इमोसनल, इथिकल–लर्निंग) अर्थात् सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक–अध्ययन के विचार से विश्व के अधिकांश देश प्रेरित–प्रभावित हैं।

ज्ञातव्य है कि तिब्बत संबंधी सांसदों के विश्वस्तरीय मंच का पहला अधिवेशन 1994 में नई दिल्ली में हुआ था। इसके बाद विलनिअस (1995), वाशिंगटन डी.सी. (1997), एडिनबर्ग (2005), रोम (2009), ओटावा (2012), रीगा (2019) तथा वशिंगटन डी.सी. (2022) में इसके अधिवेशन हुए थे। अभी टोक्यो में सम्पन्न इस 9वें अधिवेशन में पहले लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई और आगे के लिये विभिन्न कार्यक्रम तय किये गये।

हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मशाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार वर्ष 2025 को करुणा वर्ष के रूप में मना रही है। दलाई लामा के जन्मदिन पर इसके द्वारा आयोजित विशेष सम्मान समारोह में टोक्यो अधिवेशन के प्रतिभागियों के साथ ही अन्य तिब्बत समर्थक संगठन एवं सहकर्मी भी शामिल रहेंगे। सभी दलाई लामा की चार प्रतिबद्धताओं से पूर्णतः प्रभावित हैं। दलाई लामा बताते हैं कि मानवीय मूल्य, जैसे– शांति, अहिंसा, करुणा, सहयोग आदि संसार में प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक हैं। धर्मविरोधी या अधार्मिक व्यक्ति के जीवन में भी ये महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार संसार में ''सर्वपंथसमादरभाव'' अर्थात् सभी पंथों के प्रति समान आदर का भाव भी जरूरी है। हम अपने पंथ (संप्रदाय, रिलिजन, मत, पूजा–पद्धति) के अनुरूप रहें तथा अन्य पंथों एवं उनके अनुयाइयों का भी आदर करें। इससे सभी पंथों के बीच संघर्ष की जगह सहयोग आ जायेगा।

दलाई लामा के अनुसार भगवान् बुद्ध के विचार पर आधारित प्राचीन नालन्दा परंपरा ने भारत को विश्वगुरु बनाया था। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन गौरव को पुनर्जीवित करके मानवता की बहुत बड़ी सेवा की जा सकती है।

दलाई लामा चूँकि तिब्बती हैं इसलिये वे चाहते हैं कि तिब्बत समस्या का शीघ्र समाधान हो। स्वतंत्र तिब्बत देश पर अवैध आधिपत्य जमा चुकी चीन सरकार षड्यन्त्रपूर्वक तिब्बत का चीनीकरण कर रही है। वह तिब्बत को ''सिजांग'' कहने–लिखने लगी है। तिब्बती स्थानों–संस्थानों को चीनी नाम दिये गये हैं। तिब्बती बच्चों को विशेष प्रकार के शिक्षण संस्थानों तथा छात्रावासों में रखकर उनमें तिब्बत, तिब्बती भाषा–संस्कृति, इतिहास, परंपरा एवं गौरवपूर्ण धरोहर के प्रति घृणा भरी जा रही है। वे मानसिक रूप से चीन समर्थक हो गये हैं।

भारत में भी विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत को अपनी भाषा में सुविधानुसार नये नाम दे दिये थे। उन्होंने भारतीय स्थानों, प्रतीकों, धरोहरों के नाम भी बदल दिये। उनके सुनियोजित षड्यन्त्र के कारण भारत में मानसिक गुलाम हो चुके लोगों को विदेशी आक्रमणकारियों के व्यक्तित्व–कृतित्व ही प्रभावित करते हैं। वे गुलामी की किसी भी निशानी को बदलने के विरोधी हैं। तिब्बत में यही होने का डर है। तिब्बत यदि स्वतंत्र हो जाये तब भी चीनी मानसिकता वाले लोग, जो तिब्बती ही कहे जायेंगे, तिब्बत से गुलामी के चीनी प्रतीकों को हटाने तथा उनकी जगह तिब्बती प्रतीकों को लाने के विरोध में लगे रहेंगे। इसी खतरे के कारण दलाई लामा, निर्वासित तिब्बत सरकार तथा तिब्बती समुदाय ''मध्यममार्ग नीति'' के पक्ष में है। चीनी संविधान तथा राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुसार चीन सरकार अपने पास प्रतिरक्षा तथा परराष्ट्र संबंधी विषय रख ले। शिक्षा, कृषि आदि अन्य विषय तिब्बतियों को सौंपे जायें। इससे चीन की भौगोलिक एकता–अखंडता–संप्रभुता सुरक्षित रहेगी और तिब्बती समुदाय को स्वशासन का अधिकार मिल जायेगा। यही है स्वायत्तता की मांग अर्थात् बीच का रास्ता।

निर्वासित तिब्बत सरकार के राज्याध्यक्ष–शासनाध्यक्ष सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग, संसद के सभापति, उपसभापति, मंत्रियों, सांसदों एवं अन्य तिब्बती प्रतिनिधियों की सहभागिता में आयोजित टोक्यो अधिवेशन में स्पष्ट किया गया है कि दलाई लामा के पुनर्जन्म का निर्धारण गोल्डन फोडांग ट्रस्ट ही करेगा। प्रतिभागी सांसदों ने अपने–अपने देशों में तिब्बत के समर्थन में कानून बनवाने तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ में तिब्बती प्रतिनिधि की नियुक्ति कराने का संकल्प लिया। अमरीका, कनाडा, चेक गणराज्य, यूरोपीय संसद, नीदरलैण्ड तथा ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में तिब्बत के पक्ष में बढ़ते सहयोग एवं समर्थन की प्रशंसा करते हुए प्रतिनिधियों ने तिब्बत में जारी अमानवीय चीनी अत्याचार के विरोध में अन्तरराष्ट्रीय प्रयास को और अधिक प्रभावी बनाने का संकल्प लिया।

तिब्बत पर भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच के प्रतिनिधियों ने टोक्यो अधिवेशन में सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग द्वारा मई, 2025 में किये गये अमरीका एवं कनाडा के प्रवास को तिब्बती संघर्ष के लिये बहुत उपयोगी बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि टोक्यो अधिवेशन के प्रस्तावों तथा कार्यक्रमों का क्रियान्वयन सुव्यवस्थित तरीके से किया जायेगा। उन्होंने बताया कि साम्राज्यवादी चीन की दमनकारी तिब्बत नीति की समाप्ति के लिये चीन को बाध्य करना हमारा अन्तरराष्ट्रीय कर्तव्य है।